अनन्य

‘हिंदी की नयी उड़ान’

मासिक पत्रिका

प्रवेशांक

जून-2022

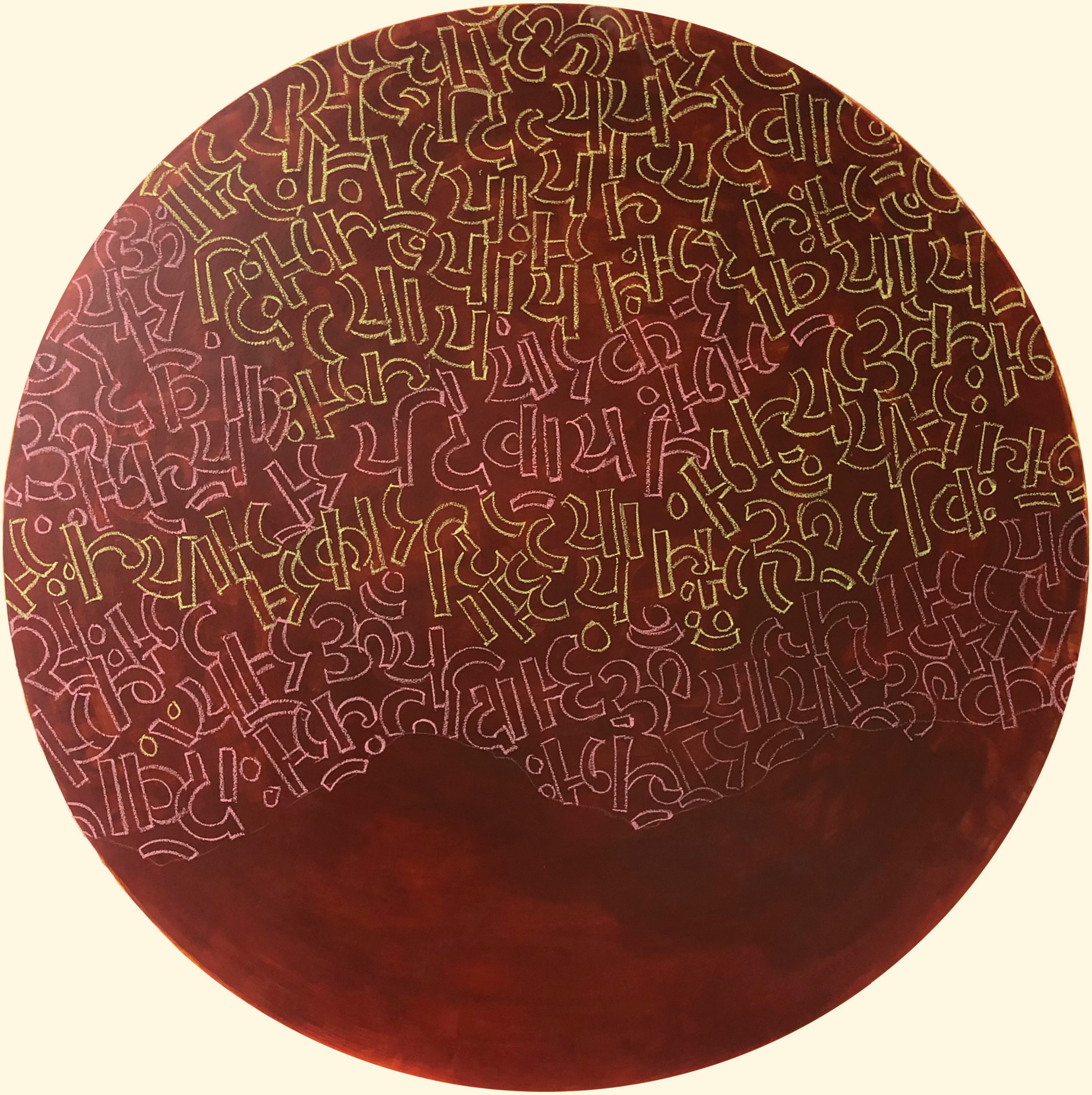

अनन्य
‘हिंदी की नयी उड़ान’

प्रबंध संपादक
अनूप भार्गव

संपादक
डॉ. जगदीश व्योम

कला संपादक
विजेंद्र एस. विज

संपादन सलाहकार
डॉ० हरीश नवल

भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क की हिंदी पत्रिका

अनन्य
मासिक पत्रिका, प्रवेशांक , जून-2022

भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क की हिंदी पत्रिका

प्रबंध संपादक
अनूप भार्गव

संपादक
डॉ॰ जगदीश व्योम

कला संपादक
विजेन्द्र एस. विज

संपादन सलाहकार
डॉ॰ हरीश नवल

तकनीकी सलाहकार
बालेन्दु शर्मा दाधीच

संपादन सहयोग
स्वरांगी साने
आभा खरे

व्यवस्था
अमित खरे
गीता घिलोरिया

रेखांकन : इंटरनेट से साभार

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के अन्यत्र उपयोग हेतु लेखक / प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित सामग्री हेतु सम्बंधित लेखक पूरी तरह से उत्तरदायी होंगे।

संपर्क :
रचनाकार अपनी रचनाएँ अनन्य में प्रकाशनार्थ यहाँ भेजे
sampadak.ananya@gmail.com

पाठक अपनी प्रतिक्रियाएँ और सुझाव यहाँ भेजें
pratikriya.ananya@gmail.com

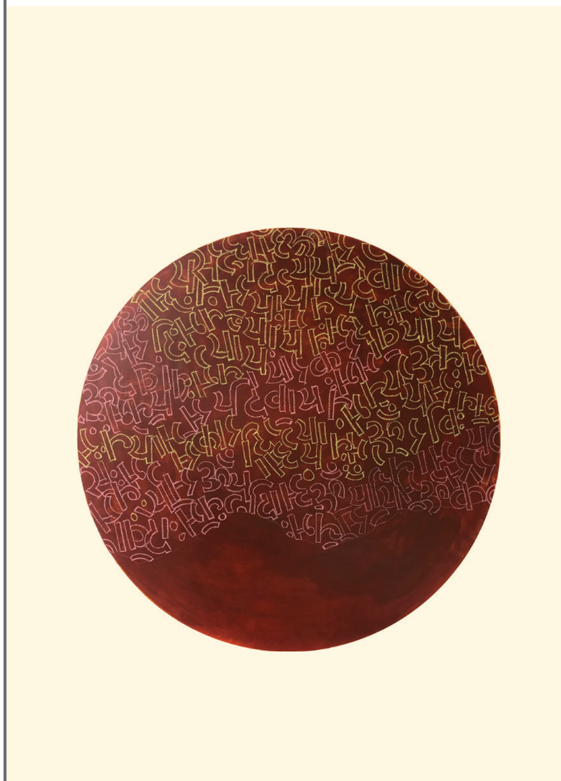

आवरण चित्र : विजेन्द्र एस. विज

इस अंक में

आइकॉन पर क्लिक करने से आप ऑडिओ रिकॉर्डिंग सुन सकते हैं।

आइकॉन पर क्लिक करने से आप विडियो देख सकते हैं।

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

सन्देश प्रधान कौंसिल
रणधीर जायसवाल 06

प्रबंध संपादक
अनूप भार्गव 07

संपादकीय
डॉ० जगदीश व्योम 08

कहानी : बहता पानी / अनिलप्रभा कुमार 09

गीत/नवगीत :
पतझड़ की पगलाई धूप / मानोशी चटर्जी 13
गाँव के दिन / पूर्णिमा वर्मन 14

ग़ज़ल : कमलेश भट्ट 'कमल' 15

लघुकथा :
जीवन सत्य / डॉ. दिनेश पाठक शशि 16
खुशी के आँसू / संगीता मनराल विज 17

हाइकु कविताएँ :
मंजु मिश्रा 19
नयी कलम 19

व्यंग्य : साहित्य देवता का मंदिर / प्रेम जनमेजय 21

कविता :
सुनो माँ! बात करनी थी! / शार्दुला नोगजा 22
मकान/ संदीप व्यास 23

कला :
कथा और चित्र : अबनींद्रनाथ ठाकुर की कृति 'तिष्यरक्षिता' / अशोक भौमिक 24

तकनीकी/ ज्ञान-विज्ञान 26
पासवर्ड के दिन लदने वाले / बालेंदु शर्मा दाधीच

विविधा : अमेरिका से भारत कैसा दिखता है? / डॉ. सुरेन्द्र गंभीर 28

गतिविधियाँ : टेक्सास की हिंदी पाठशाला / वंजारी समूह, न्यूजर्सी 32

कार्टून कोना : काजल कुमार 33

चित्र और चित्रकार : अशोक भौमिक पृष्ठ भाग / 34

Azadi Ka Amrit Mahotsav

सत्यमेव जयते
Consulate General of India
New York

संदेश

यह हर्ष और गौरव का विषय है कि भारतीय कौंसलावास, न्यू यॉर्क की वेबसाइट पर मासिक हिंदी पत्रिका 'अनन्य' का प्रकाशन दिनांक 17 जून 2022 से किया जा रहा है। यह एक सुखद संयोग है कि इस पत्रिका का प्रकाशन ऐसे समय में किया जा रहा है जब हम भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव वर्ष मना रहे हैं।

हिंदी मात्र संवाद की भाषा नहीं है बल्कि देश विदेश में बसे भारतीयों व हिंदी के जानकारों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। भाषा वह माध्यम है जिससे कोई भी समाज अपनी विरासत, ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुंचाता है और एक दूसरे के साथ जुड़ता है। विदेशों में बसे भारतीयों विशेषकर युवा पीढ़ियों को भारतीय परंपरा व संस्कृति से जोड़े रखने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान है। विश्व के अनेक राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन व शोधकार्य किया जा रहा है।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। आज हिंदी भाषा की अनेक पुस्तकों, पत्रिकाओं का विशाल भंडार इंटरनेट के माध्यम से विश्व के कोने-कोने में आसानी से उपलब्ध है। इसी क्रम में हिंदी प्रेमियों विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका में बसे हिंदी के जानकारों के हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति उत्साह को ध्यान में रखते हुए हिंदी पत्रिका 'अनन्य' का प्रकाशन भारतीय कौंसलावास, न्यू यॉर्क की वेबसाइट पर किया जा रहा है।

श्री अनूप भार्गव, उनके सम्पादक मंडल और स्वयंसेवी समूह 'हिंदी से प्यार है' को हिंदी पत्रिका 'अनन्य' के माध्यम से रोचक विषयों पर विभिन्न सामग्री हिंदी पाठकों तक सुरुचिपूर्ण रूप से पहुंचाने के प्रयासों की प्रशंसा के साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

रणधीर जायसवाल

मेरी बात...

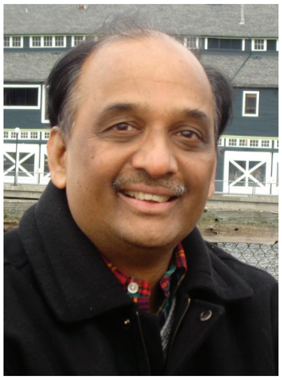

जब भी आप कोई नया काम शुरु करते हैं तो एक नया उत्साह तो होता है लेकिन कुछ शंकाएँ, कुछ डर भी साथ में होता हैं। 'अनन्य' पत्रिका के प्रवेशांक के लिए अपनी बात कहते हुए कुछ ऐसा ही लग रहा है । मन में उत्साह की तरंग है क्योंकि हम कुछ ऐसा करने जा रहे हैं जो शायद अब तक हुआ ही नहीं है या बहुत सीमित दायरे में हुआ है। हम न्यूयॉर्क स्थित भारतीय कौंसलावास के आभारी हैं कि उन्होंने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर हिंदी-पत्रिका प्रकाशित करने विषयक हमारे प्रस्ताव को स्वीकार किया और हमें यह दायित्व सौंपा।

मैं कोई बड़ा साहित्यकार नहीं हूँ, पत्रिका के सम्पादन का भी अधिक अनुभव नहीं है लेकिन हाँ 'हिंदी से प्यार है'– एक जुनून की हद तक, कुछ नया करने की कोशिश है, अच्छे मित्रों और शुभचिंतकों का साथ है, योग्य और समर्थ सम्पादकीय टीम है, विचारों में ईमानदारी है और यह विश्वास है कि 'शुभ बुद्धि' से लिया गया संकल्प व्यर्थ नहीं जाता।

जब आप भारत में रहते हैं तो हिंदी से जुड़े रहने के लिए सजग प्रयास की ज़रूरत नहीं होती, हिंदी आपके चारों तरफ़ होती ही है। लेकिन जब आप भारत की मिट्टी से दूर कहीं और रह रहे होते हैं तो भाषा को बचाए रखने के लिए 'सजग प्रयासों का होना' ज़रूरी हो जाता है। 'अनन्य' इसी दिशा में एक प्रयास होगा। मेरा यह भी मानना है कि यदि हम इस प्रयास में सफल होते हैं तो यही बात दुनिया के अन्य दूतावासों और कौंसलावासों की वेब साइट पर वहाँ के स्थानीय सहयोग से दोहराई जा सकती है। हिंदी के प्रयोग को दुनिया भर में बढ़ाने और उसके प्रचार-प्रसार का इससे सरल और असरदार तरीक़ा भला और क्या हो सकता है?

दो शब्द पत्रिका की भाषा और विषय सामग्री के बारे में- यदि एक शब्द में कहा जाए तो वह शब्द होगा 'संतुलन'। यद्यपि हम इसे पूरी तरह से विश्व स्तर की वैश्विक पत्रिका बनाना चाहते हैं लेकिन हमें अमेरिका में रह रहे उन पाठकों का भी ध्यान रखना होगा जो अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में हिंदी को नहीं जी पाते हैं।

संक्षेप में भाषा साहित्यिक और स्तरीय लेकिन ग्राह्य होगी। विषय सामग्री में भी उसी संतुलन की बात होगी। साहित्य के साथ-साथ 'कुछ और भी' होगा।

हाँ, चलते-चलते एक बात और ... हम जो भी करेंगे, पूरी पारदर्शिता के साथ 'आनंद के माहौल' में करेंगे क्योंकि 'भाषा का बोझ नहीं आनंद उठाना चाहिए'।

अपनी भाषा में मुस्कुराइए- बाक़ी सभी काम अपने आप सहज हो जाएँगे।

अभी बस इतना ही

अनूप भार्गव
प्रबंध संपादक

दो शब्द...

भारतीय कौंसलावास, न्यूयॉर्क ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर 'अनन्य' पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ करके एक ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य किया है। उनके इस कार्य की जितनी भी सराहना की जाय, कम ही होगी।

अमेरिका में हिंदी भाषा और साहित्य पर महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। हिंदी पर केन्द्रित होने वाले कार्यों में यहाँ मौलिक सृजन के साथ-साथ विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी कक्षाएँ भी संचालित की जा रही हैं, इसके अतिरिक्त अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ अपने-अपने स्तर से हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही हैं। 'अनन्य' के प्रारम्भ होने से उन्हें अतिरिक्त सम्बल तो मिलेगा ही, साथ ही एक माध्यम भी मिल सकेगा।

न्यूजर्सी में रह रहे श्री अनूप भार्गव यूँ तो कम्प्यूटर और तकनीकी विशेषज्ञ हैं परंतु हिंदी के प्रति उनका विशेष लगाव रहा है। भारत तथा अन्यान्य देशों में रह रहे हिंदी प्रेमियों/साहित्यकारों के बीच अनूप जी एक प्रकार से सेतु का कार्य लम्बे समय से कर रहे हैं। अनेक स्वयंसेवी परियोजनाओं के माध्यम से अनूप जी हिंदी की अलख जगाये हुए हैं। 'अनन्य' पत्रिका उनके ही प्रयासों का प्रतिफलन है। 'अनन्य' पत्रिका अमेरिका और भारत ही नहीं, विश्व के तमाम देशों में रह रहे हिंदी साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों के मध्य एक साहित्यिक सेतु का कार्य कर सकेगी, ऐसा मेरा सहज विश्वास है ।

'अनन्य' का प्रवेशांक आपके समक्ष है। आपको अंक कैसा लगा ? आप सभी की पाठकीय प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी. आपकी प्रतिक्रियाओं को अनन्य के आगामी अंक में हम सहर्ष प्रकाशित करेंगे.

डॉ॰ जगदीश व्योम
संपादक

डॉ. अनिल प्रभा कुमार

दिल्ली, भारत में जन्मीं और वर्तमान में अमेरिका में बसी डा० अनिल प्रभा कुमार की कहानी, कविता एवं उपन्यास विधा में अब तक चार कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का '**विदेश हिन्दी प्रसार**' सहित कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित।

ईमेल - aksk414@hotmail.com

बहता पानी

-डॉ. अनिल प्रभा कुमार

मालूम था उसे कि इस बार कुछ बदला हुआ ज़रूर होगा। मायका होगा, माँ नहीं होगी। पीहर होगा, पिता नहीं होंगे। भाई के घर जा रही है। भाभी होगी, भतीजी ससुराल में होगी। कैसा लगेगा? इस प्रश्न के ऊपर उसने दरवाज़े भिड़ा दिये थे। एक दर्शक की तरह तैयार थी भावी का चलचित्र देखने के लिए।

हवाई-अड्डे से बाहर निकलते ही एक रुलाई सी दिल पर से गुज़र गई। क्या इस बार उसे लेने कोई भी नहीं आया? भीड़ में ढूँढती रही अपनों के चेहरे। भीतर- बाहर सब देख कर जब फ़ोन की तरफ़ बढ़ रही थी तो भाई दिख गया। उसका छोटा भाई, जिसके साथ लाड़ का कम और लड़ने- डाँटने का रिश्ता ज़्यादा था।

"मैं तो तुम्हें अन्दर ढूँढ रहा था।"

"मैंने समझा शायद तुम बाहर होगे।"

भाई ने सूटकेसों से भरी ट्रॉली का हत्था अपने हाथ में ले लिया और आगे बढ़ गया।

हमेशा ऐसे ही वह उससे मिलता है। मिलने की कोई औपचारिकता वह कभी भी नहीं करता। वह पीछे-पीछे चल दी।

भाई ने ऊपर की घंटी बजाई। वह वहीं उस चुप अँधेरे में दरवाज़े पर ही खड़ी रही। पिता की मृत्यु के बाद आज पहली बार आयी है।

भाई ने उसका कंधा छुआ- "चल, ऊपर ही चल।"

वह चुपचाप उसके पीछे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी।

ऊपर की मंज़िल पर शायद नीचे का शोर पहुँच चुका था। कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा। वह उसे नहीं पहचानता। भाभी ने दरवाज़ा खोलने से पहले कहा, "वहीं रुकिए दीदी, इसे एक मिनट बाँध लूँ।"

वह फिर वहीं बन्द दरवाज़े के आगे खड़ी रही, जैसे घर के बाहर के लोग खड़े होते हैं।

सभी थके थे। थोड़ी-सी औपचारिकता के बाद सोने चले गये। वह पलंग पर लेट कर अपने परिवेश से पहचान बनाने लगी। यह पहले दादी का छोटा कमरा हुआ करता था। भाई की शादी हुई तो भाई-भाभी का कमरा हो गया। फिर रिया बड़ी हो रही थी तो उसके पढ़ने का। भाई-भाभी ने साथ का कमरा बड़ा करवा लिया था। रिया की शादी के बाद यह कमरा मेहमानों के ठहराने का- जिसमें आज वह ठहराई गई है।

वह छत पर नज़रें गढ़ाए बीते हुए को ढूँढती रही- जैसे साबुन से बनाए बुलबुलों के साथ खेलती हो। इन्द्र-धनुषी बुलबुले, हाथ में आते और गुम हो जाते।

कहीं आधी नींद में दादी के साथ पलंग पर लेट कर कहानी सुन रही है। हमेशा एक ही कहानी। एक राजकुमार, राजकुमारी को किसी राक्षस के चंगुल से छुड़ाने के लिए यात्रा पर निकल पड़ता है। रास्ते में एक साधु मिलता है जो उसे राजकुमारी तक पहुँचने का रास्ता बताता है। साधु ने कहा- "पर शर्त यह है,"दादी ज़ोर देकर, उसके चेहरे के भाव देख कर रुक जाती है।

"पीछे मुड़कर नहीं देखना। तुम्हें छलने के लिए पीछे से बहुत आवाज़ें आएँगी, पर तुम बस पीछे नहीं देखना, नहीं तो पत्थर हो जाओगे।"
वह फटी हुई आँखों से कहानी सुन रही है।

उसकी नींद खुल गई। उठ कर बाहर आ गई। कोहरे की ख़ुशबू में अपने देश की सुबह को जीती रही।

पापा जी भी तो यूँ ही बॉल्कनी में खड़े होकर दिल बहलाया करते थे। दोनों खंभों के बीच खड़े, वह फ्रेम में जड़े

किसी चित्र से ही लगते थे। पिछली बार जब वह वापिस अमरीका जा रही थी तो एयर-पोर्ट पर विदा करने जाने की उनमें शक्ति नहीं बची थी। यूँ ही गर्म दुशाला ओढ़े, उसी खिड़की में - चित्रवत से खड़े हाथ हिलाते रहे थे। तब तक, जब तक गाड़ी एक- तरफ़ा सड़क पर आगे बढ़ कर, चक्कर मार कर, दोबारा घर के सामने से नहीं गुज़र गई। वही उनका बॉल्कनी में खड़ा, विदा देता चित्र, उसकी स्मृति में उनका आख़िरी बिम्ब है।

पता नहीं वह कितनी देर और यूँ ही खड़ी रहती पर थक गई। चाय की इच्छा ने ज़ोर मारा। बाहर से गेट के खुलने और फिर बन्द होने की आवाज़ आई। वह बाहर आ गई, फिर रसोई-घर की तरफ़ मुड़ी। गैस पर एक छोटे पतीले में थोड़ी-सी बची हुई चाय थी। भाई- भाभी काम पर निकल चुके थे।

"देख, तेरी माँ नहीं बैठी है अब, वहाँ पर। भाई पूछता है, यही बहुत है। मेहमान की तरह रहना।" उसके पति ने चलने से पहले समझा दिया था।

"क्यों? मेरे बाप का घर है।" उसने अधिकार से जवाब दे दिया।"

"अब भाई का है।" उन्होंने ठंडेपन से कह दिया।"

"दीदी, वैसे यह तुम्हारा अपना घर है। पर तुम चार दिनों के लिए आई हो, मेहमानों की तरह रहो। ख़ुशी-ख़ुशी आओ और ख़ुशी-ख़ुशी जाओ।"

जब भाई ने भी यही बात कही और वह भी बिना किसी सन्दर्भ के, तो भीतर कहीं थोड़ी-सी कचोट उठी। परदेश में बसी बेटियाँ और बहनें- मेहमान तो वे हो ही जाती हैं।

भूल जाती है वह यह बात। पिछली बार जब आई थी तो रिया की शादी नहीं हुई थी। पापा नीचे वाले घर में ही रहते थे। उसने ध्यान दिया कि वह जब भी ऊपर होती है, रिया हमेशा नीचे चली जाती है और जब वह नीचे पापा के पास होती, रिया ऊपर चली जाती। और अगर वह भी कहीं उसी वक्त ऊपर पहुँच जाती तो भाभी- भतीजी दोनों अपने कमरे में घुस-पुस कर रही होतीं। वह यूँ-ही, बेकार सी उनके सामने से दो-तीन बार गुज़रती। कोई उसे अन्दर आने के लिए नहीं कहता था।

उसे वहाँ, उस घर में अपना होना इतना फ़ालतू लगता कि वह कमरे में आकर, डायरी में बस एक सवाल लिखती- "मैं यहाँ क्यों आती हूँ?"
...

कब से तैयार होकर ड्राइवर के आने का इंतज़ार कर रही है

भाई आया। "रिया के नाना- नानी को एक और गाड़ी की ज़रूरत थी तो ड्राइवर को मैंने वहाँ भेज दिया है।"

ज़ाहिर था कि दूसरी गाड़ी भाभी काम पर ले गई थीं।

तमतमा गई वह, इन्हें किसी के वक्त की परवाह नहीं।

"अच्छा होता, अगर पहले ही बता दिया होता। मैं टैक्सी ले लूँगी।"

"यह अमरीका नहीं है, अकेली औरतों का टैक्सी में घूमना ख़तरनाक साबित हो सकता है।"

उसके पैरों में बेड़ियाँ डालकर वह बाहर निकल गया।

उफ़ान थमा तो उसने माधवी को फ़ोन मिलाया। वह मिल भी गई।

"चल मुझे थोड़ी शॉपिंग तो करवा दे।" माधवी ख़ुशी से राज़ी हो गई।

"याद है, कॉटेज एम्पोरियम से हम दोनों ने कितनी सुन्दर साड़ियाँ ली थीं?"

"अब तो नया खुल चुका है।"

"मालूम है। हैंडलूम-हाउस चलें?"

"अब तो वह भी बन्द हो गया है।"

"तो फिर चाँदनी-चौक चलते हैं।"

"तू पुरानी जगहों से इतनी चिपकी हुई क्यों है?" माधवी की आवाज़ में सवाल नहीं खीझ थी।

"पता नहीं। शायद वह मेरी सुखद स्मृतियों के स्थल हैं।"

"तुम लोग जो बाहर से आते हो न, पुरानी बातें बहुत करते हो। जहाँ, जिस जगह, जिस समय देश छोड़ कर विदेश में बसते हो, बस उसी समय के ताने-बाने में बन्द हो जाते हो और सोचते हो कि सब कुछ तुम्हारे हिसाब से वहीं रुका, थमा खड़ा होगा।"

उसने माधवी की बात का जवाब जैसे कहीं बहुत गहरे से दिया- "शायद मैं उसी पुराने-पन, उन्हीं बिछड़े सुखों की तलाश में लौटती हूँ। वह मेरी कम्फ़र्ट-ज़ोन है। इस नए-पन में मेरी पहचान खो जाती है। और मैं अपने को गँवाना नहीं चाहती।"

"गुम तो तू हो ही चुकी है, दो संस्कृतियों के चक्कर में।"

"नहीं, मैंने अपने संस्कारों और मूल्यों को नहीं छोड़ा।" उसने प्रतिवाद किया।

"वही तीस साल पुराने मूल्य न?"

उसने सहेली के व्यंग्य का जवाब ही नहीं दिया।

...

"जाने से पहले एक बार अपना घर तो देख लेने दे।" उसने आख़िर भाई से कह ही दिया।

"अच्छा !" उसने अनमना सा सिर हिला दिया। शाम को ले भी गया। आँगन पार कर वह जल्दी से बाँयें कमरे की ओर मुड़ गई। वहाँ से पलंग हट चुका था। एक मेज़, एक कम्पयूटर, कुछ कागज़, एक फ़ाइल कैबिनेट - शायद भाई ने वहाँ अपना ऑफ़िस बना लिया था। वह ख़ाली-ख़ाली आँखों से सब घूरती रही। ढूँढ़ती रही अपने पिता की याद को, जिसे वह यहाँ छोड़कर गई थी। आदी हो गई थी उन्हें इसी जगह पर लेटा हुआ देखने की। इस ज़मीन के हिस्से पर ज़िन्दगी की लिखावट बुरी तरह से घिच-मिच हो गई थी। अब उसी हिस्से पर पड़ी थी- एक मेज़, कुछ फ़ाइलें और उन पर पड़ी धूल। वह बाहर निकल आयी। रसोई के साथ लगा उसका अपना कमरा था। उसने धीरे से दरवाज़े पर उँगलियों का दबाव डाला। कमरा अन्दर से बंद था। भाई ने दूसरी ओर से जाकर कमरे में लगे ताले को खोल दिया। खुलने पर अन्दर से धूल की गन्ध आई। वह कमरे के बीचो -बीच आकर खड़ी हो गई। एक अजीब सी झुरझुरी उसके बदन से गुज़र गई। जैसे यह कमरा एक बड़ी-सी लिफ़्ट था और इसके अन्दर रहकर अतीत में उतरने का अधिकार सिर्फ़ उसी को था। जैसे किसी योगी को किसी ने बक्से में बंद कर दिया हो और उसे कुछ समय भूमि-गत समाधि में बिताना था।

"तुम जाओ। मैं थोड़ी देर यहाँ अकेले रहना चाहती हूँ।"

बिना प्रतिवाद किए भाई हट गया।

उसने गहरी साँस ली। जैसे ऐसा करने भर से, यादों के कुएँ से वापिस ज्यों का त्यों लौटने का साहस आ जाएगा। कमरा अन्दर से बन्द कर लिया। उस जगह पर आकर खड़ी हो गई जहाँ उसकी पढ़ने की मेज़ थी। जहाँ उसने एम.ए. की पढ़ाई की थी। वहाँ कुछ बन्द पेटियाँ पड़ी थीं। यहाँ उसकी चारपाई हुआ करती थी, उसने अन्दाज़ा लगाया। इस अल्मारी में उसके फ़्रॉक थे जो सलवार-कमीज़ों में और फिर साड़ियों में बदल गए। उसके सैंट की ख़ुशबू कपड़ों में उतर जाती थी

और उसी महक का झोंका अल्मारी खोलते ही बाहर आ जाता। अपनी अल्मारी पर भाभी का लगा ताला देखकर एक कातर-सी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर फैल गई। एक पुराना लोक-गीत कलेजे पर दर्द की लकीर खींच गया।

"भाभियाँ मारन जन्धरे नी माँए, मेरा हुन कोई दावा वी नां।"

वह धीरे-धीरे कमरे में एक जगह से दूसरी जगह जाकर खड़ी हो गई। एक-एक क़दम से कितनी यादों, अनुभवों और भावनाओं का सफ़र तय कर लिया। दीवार पर लगी माँ की बड़ी-सी तस्वीर पर दृष्टि रुक गई। वह पास आकर खड़ी हो गई। उसने हाथ बढ़ा कर तस्वीर को छूना चाहा, पहुँचा नहीं।

उसकी साँस तेज़-तेज़ चलने लगी। तस्वीर देखते हुए एक बड़ी दुर्दमनीय इच्छा उठी- माँ के गले लगने की। उसने आँखें बन्द कर लीं। होठ काँपे और पता नहीं कब वह फूट-फूट कर रो पड़ी। "यह भी कोई मायके आना हुआ। माँ, तेरे घर में मुझे पूछने वाला कोई नहीं।"

"नी कनकां निसरियां, धियां क्यों बिसरियां माए

दूरों ते आई सी चल के नी माए। तेरे दर विच रई यां खलो

भाभियां ने पुछया नईं सुख-सुण्या हाय, वीरा न दित्ता ई प्यार

नी कनकां लम्बियां, धियां क्यों जम्मियां नी माए?"

खड़ी न रह सकी, वहीं बक्सों पर बैठ गई। क़ातिल हमेशा अपने ज़ुर्म के स्थान पर लौटता ज़रूर है। पर उसने तो कोई अपराध नहीं किया। उसका स्रोत है, मूल है यहाँ, इसीलिए लौटती है। "पागल, गंगा क्या गंगोत्री से मिलने लौटती है? वह तो सागर की ओर ही बढ़ती है, उसी में समाहित हो जाती है।" जैसे माँ ही समझा रही थी।

"बहन मेरी, तुम जीजा जी और बच्चों में मस्त रहा करो। हमारी फ़िक्र मत किया कर, हम मज़े में हैं।" भाई ने भी तो उसे उसकी दिशा बता दी थी।

"जब पति, बच्चे, काम और वहाँ के सम्बन्धों के साथ, एक नए देश और नई संस्कृति के साथ जूझते हुए पस्त हो जाओ तो क्या तब भी इच्छा न हो, अपने उसी सुखद अनुभव में फिर से गोता लगाने की? वह अपने से ही सवाल करती है। "जिस पानी में तुमने गोता लगाया था, वह तो कब का आगे निकल चुका। तुम एक ही पानी में डुबकी बार-बार नहीं लगा सकते। पानी वहीं नहीं रहता।" माधवी के गुरु जी ने कभी कहा था।

वह देखती है, वही अब उसका कमरा नहीं रहा, रिया का भी नहीं रहा। यह जो है, शायद यह भी नहीं रहेगा। हर बार कुछ नया होगा।

उसकी आँखें बन्द थीं जैसे ध्यान में हो। दरवाज़े पर खटखटाहट हुई। वह बाहर निकल आई। भाई उसके चेहरे की ओर देखता रह गया। इस सारे समय के दौरान उसने बहन के चेहरे पर कभी इतनी शांति नहीं देखी थी।

...

सामान गाड़ी में लद चुका था। हँस कर, सबसे गले मिलकर विदाई ली। न कोई आँख भीगी, न किसी ने तड़प कर पूछा- "अब कब आएगी ? जल्दी आना।" उसने उम्मीद भी नहीं की थी।

कार एक-तरफ़ा सड़क से होकर आगे बढ़ गई। फिर वापिस घूम कर घर के सामने आ गई। जानती थी कि आज बॉल्कनी के चौखटे में जड़ी, वह लम्बी, दुर्बल आकृति विदा नहीं दे रही होगी। फिर भी बड़ी तीव्र इच्छा

उठी- आख़िरी बार उधर देखने की। "मत देख पीछे मुड़कर, पत्थर हो जाएगी।" पता नहीं कहाँ से, किसने उसे चेतावनी दी।
वह सिर सीधा किए, गड्डमड्ड होती रोशनियों को देखती रही। गाड़ी आगे की ओर बढ़ गई।

मानोशी चटर्जी

कनाडा में रहने वाली गीत, ग़ज़ल, हाइकु, क्षणिकाएँ, कविताएँ, कहानी, लेख आदि विधाओं में लेखन करने वाली मानोशी चटर्जी का जन्म कोरबा, छत्तीसगढ़ में हुआ। आपके काव्य संग्रह, संगीत अल्बम आ चुके हैं, साथ ही विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। टीवी पर सांस्कृतिक सफ़र मानोशी के साथ कार्यक्रम की संचालिका हैं। आपको कई सम्मान प्राप्त हैं।

ईमेल - cmanoshi@gmail.com

पतझड़ की पगलाई धूप

यहाँ सुनें »

-मानोशी चटर्जी

भोर भई जो आँखें मींचे,
तकिये को सिरहाने खींचे,
लोट गई इक बार पीठ पर
ले लम्बी जम्हाई धूप,
अनमन सी अलसाई धूप
पतझड़ की पगलाई धूप |

पोंछ रात का बिखरा काजल,
सूरज नीचे दबता आँचल,
खींच अलग हो दबे पैर से,
देह-चुनर सरकाई धूप,
यौवन ज्यों सुलगाई धूप
पतझड़ की पगलाई धूप |

फुदक-फुदक खेले आँगन भर
खाने-खाने एक पाँव पर,
पत्ती-पत्ती आँख-मिचौली
बचपन-सी बौराई धूप,
पतझड़ की पगलाई धूप

■

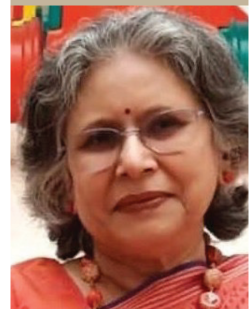

पूर्णिमा वर्मन

साहित्य, संगीत, कला और दर्शन की अनेक विधाओं में सक्रिय, पूर्णिमा वर्मन का जन्म पीलीभीत, उ.प्र. में हुआ। वेब पर हिंदी की पहली व्यवस्थित पत्रिका के रूप में अभिव्यक्ति और अनुभूति का ऐतिहासिक महत्व है जिसका संपादन पूर्णिमा वर्मन शारजाह से करती रही हैं। नवगीत पर केन्द्रित कई बरसों से वे लखनऊ में वृहद आयोजन, करती आ रही हैं. पूर्णिमा जी के तीन कविता संग्रह प्रकाशित हैं, अनेक प्रवासी साहित्यिक संकलनों और पाठ्यक्रमों में उनकी रचनाएँ शामिल हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान सहित कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित पूर्णिमा वर्मन ने 25 वर्षों तक शारजाह में रहने के बाद लखनऊ में साहित्यिक/सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना की है।

ईमेल - purnima.varman@gmail.com

गाँव के दिन

-पूर्णिमा वर्मन

हँस रहे पीपल तले
लम्बी दुपहरी गाँव के दिन

छाँह है बुनती चटाई धूप की
और आहट है कहीं से सूप की
बन रहीं सड़कें
निरंतर रच रही हैं
एक संरचना शहर प्रारूप की
खो न जाएँ फिर कहीं
ये सुघर साँवल छाँह के दिन
हँस रहे .....
घट रही, पहले नदी जो थी भरी
अब वनस्पति भी नहीं उतनी हरी
और रिश्ते भी कहाँ वैसे रहे अब
कट रही बाकी बची जो खरहरी
साथ हैं बस याद की
बहती निरंतर नाव के दिन
हँस रहे....

लौटते धुनके उतरती सर्दियाँ
अंजुरी में याद भीगी सुर्खियाँ
रेत के टीले, हरे मैदान चौड़े
और दस्तक दे रहीं हैं गर्मियाँ
ले चलें हम बाँधकर
हल्की सुनहरी घाम के दिन
हँस रहे ...

कमलेश भट्ट कमल

सुलतानपुर, उ.प्र. में जन्मे कमलेश भट्ट कमल की अब तक विभिन्न विधाओं में 23 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने हाइकु पर विशेष कार्य किया है। कई रचनाओं का उर्दू, नेपाली, मराठी तथा अंग्रेज़ी में अनुवाद। कुछ रचनाएँ विभिन्न पाठ्यक्रमों में शामिल। कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित।

ईमेल - kamlesh59@gmail.com

दो ग़ज़लें

-कमलेश भट्ट कमल

1.

वो ख़ुद ही जान जाते हैं बुलन्दी आसमानों की,
परिन्दों को नहीं तालीम दी जाती उड़ानों की।

जो दिल में हौसला हो तो कोई मंज़िल नहीं मुश्किल,
बहुत कमज़ोर दिल ही बात करते हैं थकानों की।

चले हैं जान देने जो, वो ये भी सोच लें पहले,
कमी कोई नहीं दुनिया में जीने के बहानों की।

महकना और महकाना है केवल काम ख़ुशबू का,
कभी ख़ुशबू नहीं मोहताज होती क़द्रदानों की।

हमें हर हाल में तूफ़ान से महफ़ूज़ रखती हैं,
छतें मज़बूत होती हैं उमीदों के मकानों की।

2.

किसी भी काम की उसकी न दीवारें, छतें निकलीं
कोई भी जिस्म का घर छोड़कर जब धड़कनें निकलीं!

किसी को दुख से बेचैनी, किसी को सुख में बेचैनी
तो आख़िरकार दोनों की बराबर उलझनें निकलीं!

मिले जो भी, वो बिकने के लिए तैयार बैठे थे,
बस इतना था किसी की कुछ, किसी की कुछ दरें निकलीं!

नहीं निकलीं जो होनी चाहिए इन्सान के नाते,
हमारे पास बेशक और सारी दौलतें निकलीं!

गुमान उसको था वो केवल तने के बल पे साबुत है,
तभी, बरगद की हर इक शाख़ से इतनी जड़ें निकलीं!

कहीं कोई कबीर इस दौर में मिलता नहीं हमको,
मिले जो लोग उन सबकी ही मैली चादरें निकलीं!

विरोध अपना जताने का तरीका पेड़ का भी है,
जहाँ से शाख़ काटी थी, वहीं से कोपलें निकलीं!

डॉ. दिनेश पाठक 'शशि'

रामपुर, बुलन्दशहर, उ.प्र. में जन्मे डॉ० दिनेश पाठक शशि की बाल साहित्य एवं लघु कथा आदि की लगभग 35 कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी कई रचनाओं का उर्दू, बंगला, उड़िया, मराठी तथा अंग्रेज़ी में अनुवाद हुआ है। कई संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत/सम्मानित पाठक जी आजकल मथुरा (उ.प्र.) में रह रहे हैं।

ईमेल - drdinesh57@gmail.com

जीवन सत्य

-डा० दिनेश पाठक 'शशि'

कल तक जो पूरे लॉन में अपने रंग-बिरंगे फूलों की मनमोहक सुन्दरता बिखेर रहे थे, समय बीतने पर पौपी के वही पौधे आज बड़े सूखे और बेतुके लगने लगे थे अतः

साप्ताहिक अवकाश में सुबह से ही मैं पौपी के सूखे पौधों को क्यारियों में से उखाड़ने लगा।

"पापा, अब अच्छा लगने लगा न लॉन? पुराने, सूखे पौधों ने पूरी तरह ढक रखा था इन नये-नये फूल वाले पौधों को। है न पापा?"

'हाँ बेटे, पतझर के बाद बसंत और बसंत के बाद पतझर अवश्य आता है, यही प्रकृति का नियम है।

"लेकिन पापा, ये इतने-इतने सुन्दर फूल देकर सूख क्यों जाते है? ऐसे ही क्यों नहीं बने रहते?"

बच्चे का भोला प्रश्न सुन, मैं उसे पौधों के सूखने का वैज्ञानिक कारण बताने ही जा रहा था कि पास में ही
चारपाई पर बैठे वृद्ध पिता ने उसे अपने पास बुला लिया-

'आ! मैं बताता हूँ, क्यों सूख जाते हैं ये।" बच्चा खुश होकर अपने दादाजी के पास जा पहुँचा-

"हाँ बताओ दादाजी ?"

"ताकि ...... ताकि--- नई पौध फल-फूल सके बेटे!"

बच्चे के सिर पर हाथ फिराते-फिराते उनकी आँखें डबडबा आयीं.... सुनकर बच्चा अवाक् उनके चेहरे की ओर देखने लगा ..... कि इतना छोटा-सा उत्तर देने में दादाजी की आँखों में आँसू क्यों आ गये...?

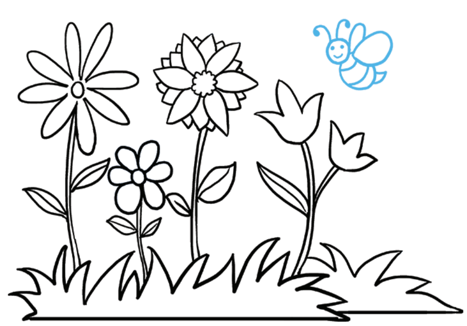

संगीता मनराल विज

दिल्ली में जन्मी, पली बढ़ी, संगीता मनराल विज मूलतः कुमायूँ (उत्तराखंड) से हैं. संगीता कविता, कहानी, लघुकथा, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण आदि विधाओं में लिखती हैं।उनकी कविताओं का पहला संग्रह 'जुगलबंदी' 2012 में प्रकाशित हुआ था । वह कई साहित्य समारोहों का हिस्सा रही हैं. उनकी कविताओं को कई समकालीन भारतीय साहित्यिक पत्रिकाओं में व्यापक रूप से प्रकाशित किया गया है ।

ईमेल - sangeeta.manralvij@gmail.com

ख़ुशी के आँसू

-संगीता मनराल विज

आज ऑफिस घुसते ही बॉस ने पूरी फेहरिस्त पकड़ा दी...ये रिपोर्ट... वो एनालिसिस, स्ट्रेटेजी प्लान वगैरह वगैरह। मन तो हुआ काश तबियत ठीक न होने का बहाना करके आज छुट्टी ही मार लेती तो अच्छा था... खैर कहीं न कहीं ये तो मन में था ही कि नार्थ सेल्स मीट है अगले दो दिन में तो काम का प्रेशर तो होगा ही... बॉस की फरमाइश तो पूरी करनी ही थी साथ ही सुबह से इतने फ़ोन कॉल्स आ रहे थे टीम के...'मैडम मेरा अचीवमेंट भेज दो... मैडम मेरा ईयर टिल डेट फिगर कितना हुआ... मैडम मेरा रोडमैप प्लान जो भेजा था वह फिर से भेज दो मेरे इनबॉक्स में कहीं गुम गया है...' हर बार हर महीने सब कुछ भेजने के बाद भी इनको जब जरूरत पड़ती है मिलता क्यों नहीं... मन मसोस कर रह गयी कमबख्त ये सेल्स वाले इतने अनऑर्गनिज़ेड क्यों होते है

सुबह के 9.30 से कब एक बज गया पता भी नहीं चला... सीमा ने फ़ोन कर के कहा, "चल आजा लंच टाइम हो गया"

"तू चल मैं आयी"

मेरे कहते ही वह झल्लाकर बोली, "यार हद है, काम पन्द्रह मिनट बाद भी हो सकता है... जल्दी आ"

मैं सोच रही थी, बस ये फाइल और निपटा लूँ फिर चलती हूँ... तभी उसका फिर कॉल आ गया.. इस बार कॉल वेटिंग पर था... सुबह से मेरा फ़ोन कॉल सेण्टर जो बना हुआ था... अब फ़ोन अटेंड करूँ या काम करूँ... दिमाग का दही हो रहा था

फिर तीसरी बार उसने कॉल किया, "क्या यार! वेट कर रही हूँ... और कॉल बैक नहीं होता तुझ से... जल्दी आ... आज तेरी मनपसंद गोभी के पराठे लायी हूँ..."

मैंने कहा, बस बस दो मिनट प्लीज स्टार्ट मत करना मैं आ रही हूँ... अब गोभी के पराठे वह भी सीमा के हाथों के मिस करना, मतलब स्वाद को जान-बूझकर ठोकर मारना... तुरंत हाथ धोये और पहुँच गयी कैफेटेरिया।

सीमा भी इंतज़ार में थी... "चल आजा, मुझे भी बहुत जोरों से भूख लगी है... "

पहला निवाला तोड़ते ही मेरा फ़ोन फिर बज उठा... सीमा ने चिढ़ कर कहा, "ये लोग भी

ना...लंच भी चैन से नहीं करने देंगे..."

मैंने कॉल रिसीव कर लिया... दूसरी तरफ तुषार था... "क्या मैडम... आपने मेरा फिगर तो दे दिया लेकिन मेरी टीम का क्या..."

मैंने चिढ़ कर कहा, "तुम लोग भी ना... कोई फाइल सेव करके रखते नहीं हो.. भेजा था मंथ एण्ड पर..." "मैडम प्लीज दोबारा भेज दो पीपीटी में डालना है"

"ठीक है" कहकर मैंने फ़ोन काट दिया.

वाह सीमा! आज तो गज़ब स्वाद के बने हैं... क्या नया डाला है.. नहीं तो वही रेसिपी है.. बहुत स्वाद है यार...

मेरा फ़ोन फिर बज उठा... इस बार सीमा ने फ़ोन बिना उठाये दूसरी तरफ रख दिया... "पहले खाना खा ले फिर बात करना... ये लोग ऐसे ही परेशान करते रहेंगे शाम तक..."

मोबाइल पर आने वाला फ़ोन किसी अनजान नंबर से था.. इसलिए मैं भी बेपरवाह हो गई... लेकिन फिर दोबारा उसी नंबर से कॉल आया... मैंने कहा, "यार कुछ अर्जेंट न हो देखने दे किसका है..."

सीमा बोली, "चल ना, फिर आएगा अर्जेंट हुआ तो... तू खाना खा..."

लेकिन तीसरी बार फिर से कॉल आने पर मैंने रिसीव कर लिया... ये ऑफिसियल कॉल नहीं था.

दूसरी तरफ से आवाज़ आयी "हेलो! आप शिखा बोल रही हैं... मैं सौरभ..."

मैंने कहा, "जी बताइए!"

"वेदांत आपका बेटा है" मैंने कहा, "जी हाँ... बोलो क्या हुआ... "

"जी मैं 4 बिशम्बर दास रोड पर खड़ा हूँ और वेदांत अपनी स्कूल ड्रेस में यहाँ रोड के किनारे खड़ा रो रहा है..." इतना सुनते ही मानो मेरे तो पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गयी... वेदांत मेरा चार साल का बेटा वह वहाँ कैसे खड़ा है... मैं बहुत घबरा गयी सौरभ ने कहा, "आप घबराइए नहीं... मैं हूँ उसके पास... आप जल्दी आ जाइए"

मैंने आव देखा न ताव स्कूटर स्टार्ट किया और भागी चली गई 4 बिशम्बर दास रोड. सीमा भी पूछती रह गयी, "हुआ क्या...? "

10 मिनट में मैं वहाँ थी.. मुझे देखते ही बेटा गले लग कर खूब रोया... सौरभ के साथ दो-चार लोग और भी खड़े हो गये थे...

अब पूरा माजरा समझ में आया, स्कूल वैन ने गलती से वेदांत को वहाँ उसका स्टॉपेज समझ कर उतार दिया था... शायद वैन कंडक्टर नया था...

आज एक बहुत बड़ा हादसा होते-होते बच गया...

मैं सौरभ का कैसे शुक्रिया अदा करूँ... पूरी उम्र भर भी शायद मैं ये बात नहीं भूल सकूँगी...

अब मेरे फ़ोन पर कोई भी कॉल अनअटेंडेड नहीं रहती.. .

ख़ुशी के आँसू थे जो रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

■

मंजु मिश्रा

लखनऊ, भारत में जन्मी और वर्तमान में कैलिफोर्निया, अमेरिका में बसी मंजु मिश्रा का एक कविता संग्रह और देश-विदेश के कई साझा संकलनों मे हाइकु, क्षणिका, मुक्तक प्रकाशित हैं। पेशे से प्रबंधन क्षेत्र में कार्यरत। कैलिफ़ोर्निया स्थित " विश्व हिंदी ज्योति" संस्था में हिंदी की सेवा में संलग्न।

ईमेल - manjumishra@gmail.com

पाँच हाइकु

-मंजु मिश्रा

1.
थामी सूर्य ने
लगाम कोहरे की
जागा है दिन

2.
पारा हो गयी
नदी पिघल कर
चाँद के साथ

3.
चुभती रही
कील जैसी मन में
अधूरी आस

4.
रुई गोले से
भागते फिरते है
आवारा मेघ

5.
भारी पड़ती
हजार शिकवों पे
एक खामोशी

नई कलम

डयूक विश्वविद्यालय, अमेरिका के बच्चों के हाइकु जो उन्होंने एक हाइकु-कार्यशाला में लिखे-

नयी जगह
नए लोगों से मिला
नया तजुर्बा
-दिव्या नटराज

लाल ओढ़नी
सड़क पर बिछी
पतझड़ है
-प्रणय जैन

हिमपात है
एक बड़ा कंबल
प्रकृति के लिए
-तेजस श्रीनिवासन

असीम रेत
सूखा रेगिस्तान
दिल में छाया
-अराबेला इगासेन

सुंदर रंग
पत्तियों की बारिश
नाचती धरा
-अली जलाल

प्रेम जनमेजय

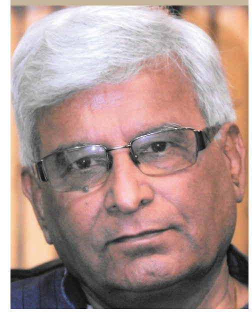

प्रेम जनमेजय ने पिछले लगभग दो दशक से 'व्यंग्य यात्रा' के सम्पादन द्वारा व्यंग्य विमर्श का एक सुदृढ़ मंच तैयार किया है। कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में इनकी रचनाएँ सम्मिलित हुई हैं और आप पर शोध हो चुके हैं । देश विदेश में आयोजित संगोष्ठियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कई साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन आपने किया है। अब तक 14 व्यंग्य संकलन, 3 व्यंग्य नाटक, 2 संस्मरणात्मक, 3 बाल साहित्य एवं 3 आलोचनात्मक कृतियां।दो दर्जन से अधिक कृतियां संपादित। अनेक महत्वपूर्ण सम्मानों से सम्मानित।

ईमेल - premjanmejai@gmail.com

साहित्य देवता का मंदिर

-प्रेम जनमेजय

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत एक चुनाव प्रधान देश है। भारत सदियों से देवी-देवता प्रधान देश भी है। तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं का वास है यहाँ। तैंतीस करोड़ देवताओं तक पहुँचने की राह गुरु दिखाता है। इस कारण भारत गुरु प्रधान देश भी है। वैसे तो गुरु के गुरुडम से सारे काम सँवर जाते हैं पर अनेक बार गुरु अपने काम सँवारने में व्यस्त होते हैं। भाँति -भाँति के योग जमाने पड़ते हैं गुरु को, तब जाकर महानता मिलती है, चरण कमल होते हैं और लक्ष्मी कृपा करती है। जिन गुरुओं को सीकरी की कृपा नहीं मिलती उनको जेल मिलती है। ऐसे गुरुओं की दशा किसानों की तरह होती है। वे अपनी आत्मा को जितना भी मार लें, दशा नहीं सुधरती। ऐसे गुरुओं के पास सूअर या गधा भी अपनी दशा सुधारने नहीं जाता। वे सूअर या गधे नहीं थे इसलिए अपनी दशा सुधरवाने के लिए ‘सत्वगुरु’ के चरणों में बैठे थे। सत्वगुरु वो होता है जिसने विरोधियों को थोथा बना दिया हो और अपना मल्टीनेशनल आश्रम स्थापित कर लिया हो।

वे दर्दीले स्वर में बोले - गुरुदेव, कृपा करें !'

-हम आज बहुत प्रसन्न हैं। हमारी कृपा से हमारा एक शिष्य सत्ता दल में मंत्री पद पा गया है और दूसरा विरोधी दल का अध्यक्ष बन गया है। बोलो, तुम्हें किस दल की कृपा चाहिए?

-गुरुदेव, मुझे राजनीतिक कृपा नहीं चाहिए, साहित्यिक कृपा चाहिए। राजनीति के कीचड़ में ...

कीचड़ शब्द सुन गुरुदेव कमल-मुख से हँसे और बोले- साहित्य में बिना राजनीति के कृपा मिलती है क्या ? राजनीति तो हर क्षेत्र में कृपा की प्राणवायु है। बिन राजनीति सब सून है, बच्चा ! खेल- खिलाड़ी, अफतर-दफतर, न्यायालय - पुलिसालय, शिक्षा-दीक्षा, पुरस्कार-तिरस्कार आदि कहाँ नहीं है राजनीति ? और फिर कमल भी तो कीचड़ में ही खिलता है। अच्छा कहो तुम्हें कैसी कृपा चाहिए- बड़ी या छोटी ?

-कृपा में बड़े-छोटे की महिमा का ज्ञान दें।

-बड़ी कृपा से जीव राष्टपति पद, प्रधानमंत्री पद, ऑल टाईम अचीवमेंट सम्मान आदि पाता है जिसके लिए अनेक बड़े प्रभुओं की कृपा चाहिए होती है। और...

-गुरुदेव, बड़ी कृपा सोचने की अपनी औकात तक नहीं है। अपनी तो इतनी भी औकात नहीं है कि हाई कमांड के सामने हकला भी सकें। हम तो मालिक के पट्टे से बँधे दुम हिला सकते हैं।

अपनी तो शिखंडी जैसी औकात है जो किसी का कंधा तो बन सकता है, कंधा दे नहीं सकता।

चेले की औकात विहीन हालत देखकर, औकात शिरोमणि, गुरु ऐसे ही चिंता में पड़ गए जैसे आजकल कांग्रेस पड़ी हुई हैं। ताकत के सभी तरह के कैपसूल मिलते हैं पर औकात बढ़ाने का एक भी नहीं मिलता। गुरु तो हर तरह की जड़ी बूटी का ज्ञाता होता है। गुरु ने चेले को पुचकारते हुए कहा- तुम ऐसा करो एक मंदिर बनाओ, और...

चेला ऐसे छिटका जैसे गिरी शेयर मार्केट से निवेशक छिटकता है। वह थाने में बयान देते निरापराधी-सा बोला- गुरुदेव मैं शुद्ध साहित्यवादी हूँ मुझे मंदिरवादी क्यों बनाते हैं? मंदिर निर्माण तो चुनावधर्मियों को ही शोभा देता है ।

गुरुदेव मंदिर जैसे शब्द पर चर्चा से शिष्य सम भयभीत नहीं हुए अपितु हँसे और बोले- वैसे तो तुम अपनी औकात का वर्णन कर चुके हो और मैं तुम्हारी औकात तुमसे बेहतर जानता हूँ। मैं राजनीतिक मंदिर की बात नहीं कह रहा हूँ, साहित्यिक मंदिर की बात कह रहा हूँ।

-क्या मैं ज्ञान की देवी, सरस्वती के मंदिर का निर्माण करूं?

-नहीं, सरस्वती केवल ज्ञान देती है, ज्ञान से मिलने वाले लाभ के लिए स्वयं कुकर्म करना पड़ता है, बेशर्म श्रम करना पड़ता है। ज्ञान जब तक लाभदायक न हो वह कुत्ते की लेंडी है। किसी पुरस्कार सम्मान के बारे में ज्ञान देना और उसे प्राप्त करने की तिकड़म में सहायक बन ज्ञान देना भिन्न है। तुम ऐसे देवता के मंदिर का

निर्माण करो जो साहित्य के फल चारि न सही दो-एक तो दिलवा दे।

-देवता में क्या गुण होने चाहिए, गुरुदेव ?

-वो सारे गुण जो तुम्हारी मनोकामना पूर्ण कर सकें। देवता ऐसा चाहिए जो इंद्र के दरबार का मुँहलगा हो, जिसके पास सत्ता के गलियारों का जी पी एस हो, जिसके आशीर्वाद प्राप्त चेले हर समिति अकादमी में छाए हों।

-पर गुरुदेव सत्ता तो परिवर्तनकामी है, बदलती है, सत्ता के गलियारों का जी पी एस भी बदलता है।

-कुछ देवता प्रभु समान अच्युत होते हैं, कोई सत्ता परिवर्तन उन्हें डिगा नहीं सकता। उनके पास अनेक तिकड़मी अस्त्र-शस्त्र होते हैं। वे बड़े साहसी होते हैं। जिसका विरोध करने का साहस करते हैं, बेशर्मी से उसका समर्थन करने का भी कलेजा रखते हैं। इनके चेहरे पर थूक टिकता नहीं है। ये हर परिवर्तन में पद्म पाते हैं।

-मेरी भूमिका क्या हो ?

-तुम उस मंदिर के पुजारी बन जाओ।

-पुजारी बन क्या लाभ मिलेंगे?

-देवता के सभी भक्त तुम्हारे भक्त बन जाएंगे। अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए देवता को चढ़ावा चढ़ेगा पर मिलेगा तुम्हें।

-साहित्यिक पुजारी का क्या कर्म होता है?

-वही जो हर मंदिर का पुजारी का होता है। देवता के नाम के जागरण करवाओ, संत समागम करवाओ। उसके चमत्कारों की कथाएँ फैलाओ कि कैसे उसके नाम का स्मरण करने वाला अकादमी पुरस्कार पा गया। प्रकाशकों से उसके घनिष्ठ संबंधों की अंर्तधारा बहाओ। सिद्ध करो कि तुम उसके अनन्य भक्त हो। इससे देवता और उनके भक्त, दोनों प्रसन्न होते हैं।

अपनी अनन्य भक्ति कैसे सिद्ध करूँ?

-चाहे अफवाह ही फैलानी पड़े, चर्चित करवाओ कि देवता तुम्हें प्रतिदिन दर्शन देते हैं। कि तुम्हारा नित्य रचना कर्म भी उनकी कृपा से होता है। तुम सुबह नाम जपन करते हो तो ऐसा प्रेशर बनता है कि रचना का जुलाब लग जाता है- और ...?

-और अब तुम जाओ, कर्म क्षेत्र में कूदो। हाँ मंदिर का उद्घाटन मुझसे करवाना मत भूलना, वरना...

■

शार्दुला नोगजा

अपनी कविताओं और गीतों के लिए जानी जाती मूलतः मधुबनी बिहार की शार्दुला नोगजा कई अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से नवाज़ी जा चुकी हैं। प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में आप छपती रही हैं। हिंदी भाषा व साहित्य के विकास हेतु हिन्दी से प्यार है, साहित्यकार तिथिवार एवं कविताई सिंगापुर के माध्यम से सक्रिय हैं। वर्तमान में आप सिंगापुर में कार्यरत हैं।

ईमेल - shardula.nogaja@gmail.com

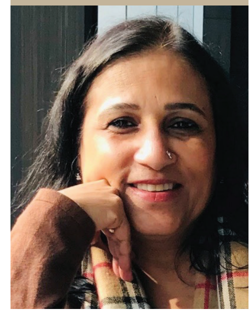

सुनो माँ! बात करनी थी!

-शार्दुला नोगजा

यहाँ देखें »

सुनो माँ! बात करनी थी!

तुम्हें वो याद है
मिट्टी की गुल्लक दो रुपये वाली
उसे मैं भूल आई हूँ वहीँ आले के कोने में
वो पूरा भर गया होगा!
अब बाबूजी नहीं हैं तो
बड़े भैया ने हौले से

हरेक पहली सितम्बर को
रखे होंगे नए सिक्के ...

सुनो माँ! कोष मेरे सब अधूरे हैं बिना उसके
कि जैसे सर ये सूना है
बिना तेरी हथेली के!

सुनो माँ! बात करनी थी!
सुनो माँ! बात करनी थी
वो मेरा छींट का झोला
टँगा ही रह गया होगा
बड़ी अलमारी के अन्दर
या खूँटी पे पड़ा होगा!

लटकती उससे लव-इन-टोकियो की
दो हरी लड़ियाँ

क्या भूरी हो गईं हैं वो?
कि अब भी सब्ज़ दिखती हैं?

... लगा कर तेल, चोटी गूँथ कर
मैं बाँधती जूड़ा
नए जब क्लिप लगाती हूँ
वहाँ क्या वो मचलतीं हैं?

ये भारत टूर पे आयेंगे
तुमसे भी मिलेंगे माँ!
मगर क्या देख पायेंगे
तुम्हें मेरी निगाहों से

करेंगे कैसे ज़िद कि
तीसी-सजमन अब ही खानी है
तुम्हें कैसे दिखायेंगे

थोड़ा भुन्ना के, अगरा के
मेरा चाँदी का पहला बाल!

लगी हो ऊँचा सुनने तुम
मगर सुन पाओगी न सब!

कहेंगे वो तुम्हें, गुड़िया तुम्हारी ठीक है मम्मी
अमूमन ठीक ही हूँ... मान लेना!

सुनो माँ! बात करनी थी!

संदीप व्यास

उदयपुर (भारत) में जन्मे संदीप व्यास वर्तमान में न्यूजर्सी अमेरिका में रह रहे हैं।आईटी विशेषज्ञ के रूप में कई संस्थानों से जुड़े संदीप छंद मुक्त कविताएँ लिखते हैं। उनकी कविताएँ कई प्रतिष्ठित ऑनलाइन पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। वह न्यू जर्सी में शुरू की गई सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्था 'झिलमिल' की कार्यकारिणी के सदस्य हैं

ईमेल - sandeepvyas1976@gmail.com

मकान

-संदीप व्यास

यहाँ मकान का मिज़ाज थोड़ा अलग होता है
छत नहीं होती
इसलिए रात को सितारों तले छत पर बातें भी नहीं होतीं
छत की बातें भी नहीं होती हैं
न पानी छिड़क कर छत को कोई ठंडा करता
न घर जुड़े होते हैं कि फाँद कर चले गये
ऊपरी मंज़िल पर साँसें बसती हैं
हर जगह खिलखिलाहटों का बोसा है
बच्चों के कमरे की छत पर
पूरी कायनात का मंसूबा है
और उस मंसूबे में हमारी पूरी कायनात
नीचे मेहमानख़ाना है
हालाँकि वहाँ कोई बैठा नहीं है कभी
और जो वहाँ बैठता है कोई
तो समझ ले कि दिल में जगह करना बाक़ी है अभी
बगल में सलीक़े से दस्तरखान बिछा है
आठ कुर्सियों वाली मेज़ पर
बीच में नक़्क़ाशी वाली शीशे की प्लेट है
तुर्की से लाया मर्तबान,
कोने में ईजिप्ट का हुक्का,
रूसी-झूमर रोशनी बिखेरता है
महीन रिश्तों को इतने तक्कलुफ में कैसे सिए कोई
आगे बढ़ते ही
ज़िंदगी शुरू होती है
रसोई घर से
सारा वक़्त वहीं गुज़रता है
थोड़ा कभी खाना बनाने में
ज़्यादा बेगम से गुफ़्तगू करने में
मेरी नज़्मों का पहला पड़ाव है वो
जब तक बेगम के तर्कों में डुबकी न लगा ले
आगे बढ़ने की जानिब नहीं है उनमें
नीचे की ओर जाओ तो तहख़ाना है
अँधेरा नहीं है
काफ़ी सामान भी रखा है
और बहुत-सी यादें
उनमें से आज कुछ ऊपर लाया हूँ
दीवार ढूँढ़ रहा हूँ
कल को अगर तहख़ाने में ही रह गयीं
तो कैसे पहचानेगा आने वाला कल
यहाँ मकान का मिज़ाज थोड़ा अलग होता है
रिश्तों का एहसास सिर्फ़
दीवारों पर ही टँगा होता है

■

अशोक भौमिक

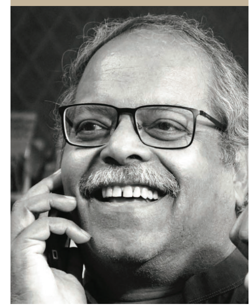

नागपुर में जन्मे अशोक भौमिक देश के मशहूर चित्रकारों में से एक हैं। पिछले चार दशकों में देश-विदेश में इनकी कई एकल चित्र प्रदर्शनियाँ लगीं और सराही गयीं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी अशोक भौमिक साहित्यकार, रंगकर्मी और मूर्तिकार भी हैं। इनकी प्रमुख प्रकाशित पुस्तकें : मोनालिसा हंस रही थी (उपन्यास) जीवनपुर हाट जंक्शन (स्मृति आख्यान) ज़ीरो लाइन पर गुलज़ार , अकाल की कला और जैनुल आबेदिन, भारतीय चित्रकला का सच , आदि ।

ईमेल - bhowmick.ashok@gmail.com

कथा और चित्र : अबनींद्रनाथ ठाकुर की कृति 'तिष्यरक्षिता'

-अशोक भौमिक

भारतीय चित्रकला का हज़ारों वर्षों का इतिहास वास्तव में 'चित्रों' का इतिहास न होकर 'चित्रणों' का इतिहास रहा है। किसी ऐतिहासिक घटना से लेकर कपोल कल्पित कथा के किसी मुहूर्त विशेष के चित्रण को हमने चित्र मान लिया। यहाँ महत्त्वपूर्ण यह भी है ये सभी चित्रण राजाओं और देवताओं की कथाओं पर ही आधारित रहे। इनमें आम आदमी का जिक्र नहीं है। भारत में चित्रकला की अधिकांश धाराओं और उप धाराओं का विकास राजाश्रय में हुआ। राजा रानियों के जीवन से जुड़ी कथाओं के चित्रणों का आधार राजा द्वारा लिखवाया गया इतिहास था वहीं देवी देवताओं की लीला कथाओं का आधार हमारी धार्मिक कथाएँ रही हैं। इन दोनों ही स्थितियों में चित्र की रचना का आधार 'साहित्य' ही रहा है। अर्थात साहित्य में सृजित और वर्णित रूप को चित्रकारों और मूर्तिकारों ने अपनी कृतियों में उतारा।

आज आधुनिक भारतीय चित्रकला में भी चित्रों को शब्दों (साहित्य) द्वारा समझाने का चलन चल पड़ा है। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण अबनींद्रनाथ ठाकुर द्वारा 1911 में बनाया गया 'अशोक की रानी' शीर्षक चित्र है । इस चित्र को 'समझाने' के लिए अबनींद्रनाथ ठाकुर ने चित्र के पीछे अपने हाथ से दो पंक्तियाँ लिखी हैं जो इस प्रकार हैं ," बोधि वृक्ष, सम्राट अशोक को बेहद प्रिय था। जिसके कारण रानी तिष्यरक्षिता इस पवित्र वृक्ष से ईर्ष्या करती थीं और गुस्से में उन्होंने इस वृक्ष को नष्ट कर दिया था। " सम्राट अशोक की पाँचवीं रानी तिष्यरक्षिता के बारे में इतिहास में अनेक कथाएँ मिलती हैं साथ ही अनेक आधुनिक साहित्यिक कृतियों में तिष्यरक्षिता का वर्णन मिलता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि अबनींद्रनाथ ठाकुर का यह चित्र ऐसी ही किसी प्रचलित कथा पर आधारित है।

चित्र में बोधि वृक्ष की ओर ईर्ष्या भरी निगाहों से देखती हुई रानी तिष्यरक्षिता का चित्र है। बोधि वृक्ष पर अशोक द्वारा अर्पित अलंकारों को देखा जा सकता है साथ ही पेड़ के कुम्हलाये हुए पत्तों से यह भी पता चलता है कि रानी ने इस पेड़ को जहर दिया था। लेकिन जो दर्शक सम्राट अशोक, तिष्यरक्षिता और बोधि वृक्ष

की इस कथा से अपरिचित हैं उनके लिए यह मात्र एक चित्र है जिसके केंद्र में एक श्वेतांगी सुन्दर महिला है जो एक सुन्दर छोटे से पौधे को देख रही है। चित्र में प्रकाश संयोजन और महिला की देह संरचना अद्भुत है साथ ही आकृतियों में बारीक रेखाओं की उपस्थिति बेहद आकर्षक है। चित्र में सीमित रंगों का प्रयोग भी गौरतलब है। यह चित्र गुलाम भारत के वायसराय की पत्नी लेडी हार्डिंग ने भारत साम्राज्ञी महारानी मेरी (शासन काल 1910-1936) को उपहार में दिया था। कहना न होगा कि चित्र के पीछे भारत की राष्ट्रवादी कला के प्रमुख स्तम्भ अबनींद्रनाथ ठाकुर की स्वहस्तलिखित व्याख्या अंग्रेजी में होने के कारण ही लेडी हार्डिंग और महारानी मेरी को तिष्यरक्षिता की कथा को जानने में शायद मदद मिली हो लेकिन, एक कलाकृति के रूप में इस चित्र को 'अनुभव' करने में अबनींद्रनाथ ठाकुर की यह व्याख्या किसी काम की नहीं है।

बालेन्दु शर्मा दाधीच

जयपुर, राजस्थान (भारत) में जन्मे, भारतीय भाषाएँ और सुगम्यता, माइक्रोसॉफ्ट में निदेशक के पद पर कार्यरत बालेन्दु शर्मा दाधीच, लेखक, संपादक, स्तंभकार हैं। हिन्दी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में व भाषायी तकनीक के विकास के क्षेत्र में लगातार सक्रिय। राष्ट्रपति सम्मान सहित दर्जनों भारतीय तथा वैश्विक पुरस्कारों से अलंकृत।

ईमेल - balendu@gmail.com

पासवर्ड के दिन लदने वाले हैं

-बालेन्दु शर्मा दाधीच

एपल ने अपने ताजातरीन मैकओएस वेंचरा में पासवर्ड के विकल्प के रूप में पासकी (passkey) को पेश किया है। यह पासकी आइफोन और दूसरी एपल डिवाइसेज में भी इस्तेमाल की जाएगी। पासकी का मतलब एक ऐसी डिजिटल कुंजी, जो आपके कंप्यूटर में स्टोर की जाती है। एक बार वहाँ लॉगिन करने के बाद आप हर एक वेबसाइट और क्लाउड आधारित सेवा से खुद ब खुद कनेक्ट हो सकेंगे क्योंकि यह उन सबके लिए आपकी पहचान को प्रमाणित करेगी।

यह घटनाक्रम क्यों? क्योंकि हम पासवर्ड मुक्त डिजिटल दुनिया की तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। पिछले कुछ सालों से पासवर्ड की प्रासंगिकता और यहाँ तक कि उसके जरिए मिलने वाली सुरक्षा पर भी प्रश्नचिह्न उठाए जा रहे हैं।

ऐसी बहुत सारी परिस्थितियाँ हो सकती हैं जब आपका पासवर्ड किसी और के पास पहुँच जाए और आपकी डिजिटल सामग्री, पहचान तथा संपत्ति तक को असुरक्षित कर दे। इसके पीछे कुछ तो उपभोक्ताओं की अपनी लापरवाही व असावधानी, कुछ तकनीकी जागरूकता के अभाव, दुर्घटनाएँ और कुछ साइबर अपराधियों की हरकतें हो सकती हैं। आपके पासवर्ड को सुरक्षित तथा गोपनीय बनाए रखने के लिए बहुत सारे तौरतरीके आजमाए गए हैं। खुद पासवर्ड के विकल्प भी ढूंढे गए हैं जैसे पिन या स्वाइप, जिनसे सुरक्षा तो बढ़ी है लेकिन इतनी नहीं कि हम निश्चिंत हो सकें। दूसरे, ये तरीके हर मामले में लागू नहीं किए जा सकते। बहरहाल, अब तकनीकी दुनिया की तीन दिग्गज कंपनियों की एक नई पहल से उम्मीद बंधी है कि शायद हम पासवर्ड के बिना भी डिजिटल माध्यमों पर पहले से ज्यादा सुरक्षित रह सकेंगे। फीदो (फास्ट आइडेंटिटी ऑनलाइन) और वर्ल्ड वाइड वेब कंशोर्शियम ने एक पासवर्ड-रहित साइन-इन मानक तैयार किया है जिसे इन बड़ी कंपनियों का समर्थन मिलने के बाद ऑनलाइन साइन-इन के ज्यादा सरल और सुरक्षित हो जाने की उम्मीद की जा रही है।

माइक्रोसॉफ्ट, गूगल और एपल पासवर्ड की जगह पर एक नई प्रणाली के विकास में सहयोग कर रहे हैं जिसके तहत आपकी साइबर सुरक्षा में आपके मोबाइल फोन की अहम भूमिका होगी। इसे मल्टी-डिवाइस फीदो क्रेडेंशियल का

नाम दिया गया है जो एक पासवर्ड-मुक्त व्यवस्था होगी। इसके तहत ऐसे हर ठिकाने पर लॉगिन करने के लिए आप उसी तरह से अपने मोबाइल फोन का प्रयोग कर सकेंगे जैसे फोन को अनलॉक करने के लिए करते हैं। फिलहाल हम इसके लिए फिंगरप्रिंट, पिन, स्वाइप, चेहरे की पहचान आदि का प्रयोग करते हैं। आपके डिजिटल उपकरण की सुरक्षा प्रणाली वेब आधारित सेवाओं पर भी काम करेगी। अपने मोबाइल फोन को सफलतापूर्वक अनलॉक करने के बाद आप ऑनलाइन कहीं भी जा सकेंगे क्योंकि आप एक बार अपनी पहचान को साबित कर चुके हैं। वह पर्याप्त है तथा पहले से ज्यादा सुरक्षित है। एपल ने मैकओएस वेंचरा में जो पासकी प्रणाली शुरू की है, वह इसी दिशा में है। नॉर्डपास नामक संस्थान की तरफ से कराए गए एक सर्वे के अनुसार आज मोबाइल फोन और इंटरनेट से जुड़े हर प्रयोक्ता के पास औसतन 100 पासवर्ड होते हैं। इनमें से ज्यादातर समान या मिलते-जुलते ही होते हैं और इसीलिए एक पासवर्ड के जाहिर हो जाने का मतलब है लगभग हर स्थान पर आपकी डिजिटल सुरक्षा का खतरे में पड़ जाना। साइबर दुनिया में बहुत बड़े अपराध चोरी हुए पासवर्डों के कारण होते हैं जिनमें आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के अपराध भी शामिल हैं।

नई व्यवस्था में आपके मोबाइल फोन को सुरक्षित बनाना काफी आसान होगा और अगर वह सुरक्षित है तो समझिए कि आपके तमाम ऑनलाइन ठिकाने भी सुरक्षित हो गए। हालाँकि इसके लिए मोबाइल फोन और ऑनलाइन ठिकानों की लॉगिन व्यवस्था को जोड़ने वाला एक सिस्टम बनाना होगा। यहाँ दो बड़ी चुनौतियाँ होंगी। पहली यह कि मोबाइल फोन असुरक्षित हो गया तो क्या सब कुछ असुरक्षित हो जाएगा। दूसरी चुनौती यह कि उपभोक्ता हजारों वेबसाइटों पर जाता है तो सबकी सब वेबसाइटें कैसे इस व्यवस्था का पालन करेंगी?

असल में दुनिया में अरबों वेबसाइटें, वेब सेवाएँ, क्लाउड सेवाएँ, गैजेट्स और दूसरे उपकरण हैं। अगर इस प्रणाली को कामयाब होना है तो उनके बुनियादी ढाँचे में कोई ऐसा बदलाव करना होगा कि वे स्वतः नई व्यवस्था में ढल जाएँ। यकीनन, यह बहुत बड़ा और लंबे समय तक चलने वाला काम है लेकिन असंभव नहीं है।

तो दारोमदार आपके उपकरण पर लॉगिन करने की व्यवस्था को अभेद्य बनाने पर आ जाएगा। सैंकड़ों वेबसाइटों के पासवर्डों को याद रखने, सुरक्षित रखने और बार-बार बदलने की तुलना में एक ही उपकरण को पक्के तौर पर चाक-चौबंद रखना ज्यादा आसान है, यह तो आप भी मानेंगे। हालाँकि फिर भी अगर कुछ गलत हो जाता है तो उसके भी रास्ते उपलब्ध होंगे। इन्हीं चुनौतियों के समाधान के लिए तो इतने बड़े दिग्गज संस्थान साथ आए हैं।

■

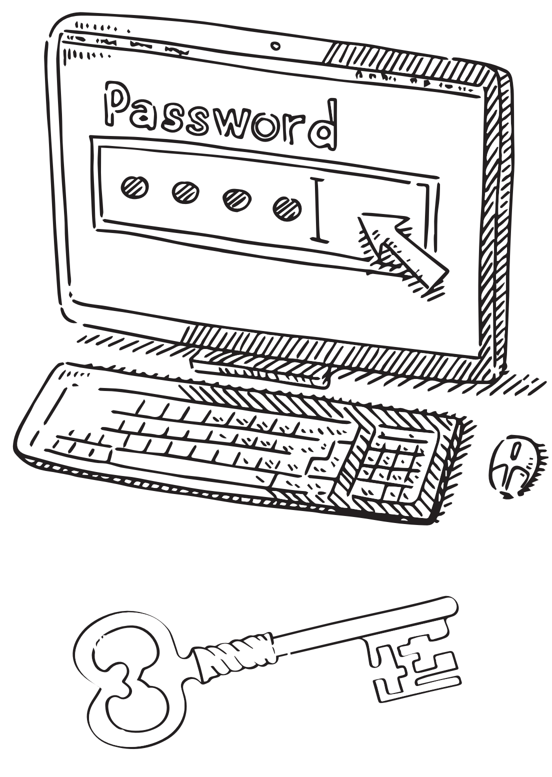

डॉ.सुरेंद्र गम्भीर

यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेन्सिल्वेनिया से सेवा-निवृत्त प्राचार्य। अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ की भाषा-समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष। कैरिबियन देश गयाना, त्रिनिदाद, सूरिनाम, ग्वाडालूप, प्रशांत महासागर में फ़िजी, हिन्द महासागर में मारीशस, और अमेरिका में प्रवासी भारतीयों की भाषाओं के संरक्षण और ह्रास से संबंधित अनेक शोध-पत्रों का राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, पुस्तकों और विश्वकोशों में प्रकाशन। भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित।

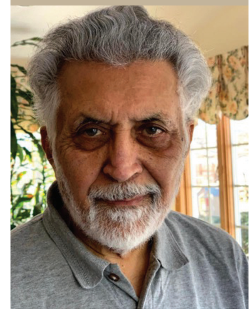

ईमेल - sg@gambhir.net

अमेरिका से भारत कैसा दिखता है?

-डॉ.सुरेंद्र गम्भीर

अमेरिका में रहते हुए मुझे इस बात का एहसास हुआ कि जब मैं भारत में था तो मैं भारत के बारे में बहुत कम जानता था। भारत से दूर रहने के बाद मुझे बहुत व्यापक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण मिला। अमेरिका में रहने वाली अन्य संस्कृतियों के बारे में मेरी समझ ने मेरे भारत-विषयक आकलन में बहुत योगदान दिया है। इससे मुझे भारत को और अधिक निष्पक्ष रूप से जानने में मदद मिली है। यह सच है कि भारत में रहते हुए मैं कुछ परिस्थितियों का अभ्यस्त हो गया था और उन्हें जीवन की एक शैली के रूप में मैंने स्वीकार कर लिया था परंतु उन्हें दूर से देखने से एक नए परिदृश्य का जन्म हुआ जिसने मुझे अधिक व्यापक रूप से सोचने की अनुमति दी। संयुक्त राज्य अमेरिका में अकादमिक दुनिया का हिस्सा होने के नाते, पश्चिमी विचारकों के लेखन और विचारों ने मेरे मस्तिष्क के नए दरवाजे खोले हैं, जिन्होंने मुझे नई दिशाओं में सोचने पर मजबूर किया है।

अमेरिका में भारत मूल के लोगों की संख्या लगभग 27 लाख है। इनमें अधिकांश पिछले 57 वर्षों में ही यहाँ आये हैं। भारत मूल के ऐसे प्रवासी भी बहुत हैं जो पहले किसी अन्य देश में रहते थे और अमेरिका में उनका यह दूसरा आप्रवासन है। ऐसे अधिकांश आप्रवासी कैरिबियन देशों से, अफ़्रीका से और योरुप से अमेरिका आये । ऐसा लगता है कि इन सभी को भारत दूर से अलग अलग ही दिखता है। कैरिबियन देशों में बसे लोगों से तो मेरा व्यक्तिगत शैक्षिक सम्बंध रहा है। उन्हें भारत से दूर रहते हुए लगभग 180 वर्ष हो गए हैं। इन सभी में एक बात सामान्य है– सब अपने-अपने देश में खुश हैं पर सबके दिल में भारत के लिए प्यार और आदर है। धार्मिक क्रिया-कलाप, भारतीय खाना, और बालीवुड के चलचित्र उन्हें भारत से किसी न किसी रूप में जोड़े रखते हैं। अमेरिका में भारत-मूल के ऐसे बहुत लोग हैं जो भारत से दूर रहते हुए भी भारत से वैचारिक स्तर पर जुड़े रहते हैं। भारत निरंतर उनके भावों में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता है।

भारत की राजनीति, उसका तकनीकी विकास, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उसकी भूमिका, क्रीड़ा-जगत के समाचार, साहित्य, और वहां निरंतर उभरती सामाजिक और राजनीतिक सुघटनाएं और दुर्घटनाएँ उनके लिए न्यूनाधिक मात्रा में लगातार दिलचस्पी का विषय बनी रहती हैं। आधुनिक उदीयमान भारत पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक, तकनीकी और राजनीतिक रूप में परिपक्व लोकतंत्र को उपस्थित करता हुआ एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। दुनिया में भारत की

प्रतिष्ठा बढ़ी है और उस कारण से अमेरीका और विश्व भर में अनेकानेक भारत-मूल के लोगों की भारत से घनिष्ठता में भी वृद्धि हुई है।

भारत अमेरिका से आठ हज़ार मील दूर है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत अमेरिका से लगभग चार गुना बड़ा है और क्षेत्रफल में भारत अमेरिका से एक तिहाई है। इस तथ्य से अमेरिका की तुलना में भारत के भीड़-भड़क्के की कल्पना की जा सकती है। अमेरिका में जनसंख्या का घनत्व एक मील पर 94 लोग हैं जबकि भारत में जनसंख्या का घनत्व एक मील पर 424 लोग हैं। स्पष्ट है कि अमेरिका की तुलना में भारत में लोगों का एक सैलाब आया हुआ लगता है। इतना ही नहीं– हर वर्ष लगभग डेढ़ करोड़ बच्चों का जन्म वहाँ की जनसंख्या को और बढ़ाता है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए भारत संसाधन कैसे जुटाता होगा? यह सुनकर और भी आश्चर्य लगता है कि भारत न केवल अपने लोगों के लिए प्रचुर मात्रा में खाद्य पदार्थ और जीवन-निर्वाह के लिए अन्य आवश्यक वस्तुएँ पैदा करता है अपितु अन्न और अन्य अनेक वस्तुओं का दूसरे देशों को निर्यात भी करता है। भारत से दूर रहने के बाद भी पहली पीढ़ी के लोगों के दिल में भारत बसा रहता है। स्वाभविक ही है। जहाँ आप पैदा हुए, बड़े हुए, जहाँ आपने बोलना सीखा, तरह तरह के रसास्वादन किए, विद्यालयों में शिक्षा पाई, आचार विचार सीखे और जहाँ आपके सगे सम्बंधी हैं, मित्र हैं, उस धरती की याद यदि आपके साथ-साथ बरसों चलती है तो आश्चर्य ही क्या है? अनेक वर्षों के बाद भी भारत और भारतीय विचार पहली पीढ़ी के अनेक लोगों के अस्तित्व और व्यक्तित्व का हिस्सा बने रहते हैं। भारत की प्राचीन दार्शनिक संस्कृति में निहित विचार जहाँ लोगों के जीवन के गहन चिंतन को निरंतर उद्वेलित करते हैं वहाँ उनके जीवन-पथ का मार्गदर्शन भी करते हैं। इसी कारण भारत-मूल के आप्रवासी कहीं भी हों उनको सब प्रकार का वैविध्य (डायवर्सिटी) सहज ही लगता है। यह पक्ष सभी पीढ़ियों के लिए सच है। वैविध्य के प्रति सम्मान का यह अन्तर्निहित भाव आगे आने वाली पीढ़ियों में भी बराबर बना रहता है।

अमेरिका की चमक-दमक में काफ़ी कुछ खो भी जाता है। पहली पीढ़ी के कुछ लोगों से बात हुई तो सामान्य निष्कर्ष यह निकला कि रहने के लिए अमेरिका प्रेयस और श्रेयस है और प्यार करने के लिए भारत। भारतीय विचार और भारत में रहने वाले रिश्तेदार भारत के लिए प्यार और आदर का आधार हैं। ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो यहाँ रहते हुए भारत के विकास में योगदान करने के लिए समय और धन लगाते हैं। यह योगदान अपने पैतृक गाँवों में स्कूल अस्पताल आदि खोलने से लेकर अनेकविध परियोजनाओं में तकनीकी और आर्थिक सहायता आदि प्रदान करना है। परंतु दूसरी पीढ़ी तक आते-आते यह प्यार कम हो जाता है और तीसरी पीढ़ी में तो भारत एक विदेश-सा ही बन जाता है। तीसरी पीढ़ी तक आते-आते विरासत में मिली भाषा तो लुप्त हो जाती है पर धर्म और संस्कृति की निरंतरता के कारण नि:सन्देह बाद वाली पीढ़ियों का भारत से आध्यात्मिक सम्बंध सतही धरातल पर किसी न किसी सूक्ष्म रूप में बना रहता है।

मैं पहली पीढ़ी का भारतीय मूल का व्यक्ति हूँ, और भारत में जो कुछ हो रहा है उसमें मेरी गहरी दिलचस्पी है। मैं भारतीय समाचार, प्रवचन, संगीत और टीवी पर होने वाली चर्चाएँ सुनता हूँ। समय समय पर बालीवुड के गाने सुनता हूँ, संतों की वाणियां सुनता हूँ। भारतीय साहित्य पढ़ता हूँ। मैं बड़ी उत्सुकता और आशा के साथ भारत में राजनीतिक क्षेत्र में बढ़ती जीवंतता को देखता हूं। भारतीय मीडिया में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के प्रबुद्ध वक्ताओं द्वारा कई विवादास्पद मुद्दों पर उत्साही और बौद्धिक चर्चाएँ होती हैं। उदाहरण के लिए भारत का आदर्श स्वरूप (आइडिया ऑफ़ इंडिया) कैसा हो- यह भारत के उभरते रूप को

निर्धारित करने के लिए बहुत ही विचारोत्तेजक चर्चा का विषय है। अलग-अलग वक्ता तर्कसंगत राय देते हैं और राष्ट्र की विभिन्न छवियों को उजागर करते हैं।

मैं आधुनिक भारत से लगातार जुड़ा हुआ हूँ और मैं अपने मस्तिष्क में ही विश्लेषण करता रहता हूं कि भारत किस ओर जा रहा है। मुझे भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था, उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता के केंद्रों पर गर्व होता है। भारत की धार्मिक विविधता मानव समाज में सह-अस्तित्व के उत्कृष्ट विचारों का संवर्धन करती है। जब मैं वंदे मातरम् गीत सुनता हूँ, तो मैं भावुक हो जाता हूं और कई बार मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। यहा तक कि अगर मैं भारत की कुछ परिस्थितियों के बारे में निराश भी हूँ तो भी मेरी आलोचना भारत के प्रति मेरे प्यार में बदल जाती है। मुझे भारत की उपलब्धियों के बारे में जानना अच्छा लगता है, और मैं उसकी असफलताओं, हिंसा और किसी भी बदसूरत घटना से दुखी होता हूँ। मुझे याद है कि चंद्रयान-2 को अपने नियत स्थान पर पहुँचते देख मैं लगभग खुशी से झूम उठा था, लेकिन एक मिनट बाद, चंद्रयान-2 और पार्थिव स्टेशन के बीच संचार के अभाव से मैं दुखी हो गया था। भारत पर एक आलोचनात्मक नज़र भारत के बारे में विविध छवियाँ पैदा करती है- एक तरफ़ धार्मिक सहिष्णुता और दूसरी तरफ़ धार्मिक कलह, एक तरफ़ आध्यात्मिकता का आदर्श और दूसरी तरफ़ भौतिकता के प्रति बढ़ता आकर्षण, एक तरफ़ घर के बाहर का प्रदूषण दूसरी तरफ़ घर चौके की पवित्रता, एक तरफ़ गरीबों की झोंपड़ियाँ और पास में ही खड़े ऐशो-इशरत से भरे महल, एक तरफ़ पारिवारिक एकता दूसरी तरफ़ पारिवारिक कलह, एक तरफ़ परंपरा और दूसरी तरफ़ पश्चिम का अन्धानुकरण, एक तरफ़ विद्वत्समाज में आत्म-श्लाघा का प्रचुर प्रयोग और दूसरी तरफ़ आत्म-निषेध और त्याग के अद्भुत स्वर। मैं इन सभी परस्पर-विरोधी परिस्थितियों को एक ही समग्रता में देखता हूँ। यही है मेरा भारत । शायद पहले भी ऐसा ही रहा हो । संभवतः समग्र मानव-समाज सदा से ऐसा ही रहा है। परंतु मेरा आज का भी भारत ऐसा हो– यह जानकर मुझे अच्छा नहीं लगता! न जाने क्यों?

भारत के कई वर्गों में गरीबी, जातिवाद, धार्मिक समुदायों के बीच छिटपुट हिंसा, पश्चिम की अंधी नकल और कुछ अंतर्राष्ट्रीय जातियों के खिलाफ रंग-आधारित भेदभाव मेरे लिए चिंताजनक विषय हैं। इसके अलावा, धन के लोभ ने अच्छे अच्छे लोगों को और सत्ता ने अनेक राजनेताओं के दिमाग को कैसे प्रदूषित कर रखा है, भाषाई अप्रवीणता भारत के विकास को सूक्ष्म तरीकों से कैसे अंदर ही अंदर से खाए जा रही है। भाषिक अप्रवीणता से मेरा अभिप्राय है कि अधिकांश लोगों की न अपनी भाषा में उच्चस्तरीय प्रवीणता है और न अंग्रेज़ी में। ये सब गंभीर चिंता के विषय हैं। बॉलीवुड भी मेरे लिए बहुत भ्रमित करने वाली स्थिति है। मुझे नहीं पता कि मुझे इससे प्यार करना चाहिए या नफ़रत। इसके मनोरंजन और भारत में भाषाई एकीकरण प्रदान करने के लिए मैं इसकी प्रशंसा करता हूँ। साथ ही भाई-भतीजावाद, ड्रग्स और कास्टिंग-काउच के लिए मैं इसे बदनाम भी देखने लगा हूं। मैं इसे आज के युवा-वर्ग के जीवन की कुछ दिशाओं में दिग्भ्रमिता का कारण भी मानता हूँ।

लेकिन मुझे पता है कि मेरा भारत शक्ति-पुंज है। भारत ने विश्व के अनेकानेक दार्शनिक, वैज्ञानिक विद्वज्जनों और सामान्य लोगों को अपने विचारों से अभिभूत किया है। किस किस के नाम गिनाऊँ? भारत के सामान्य नगरिकों का भी भारत के सशक्त उज्ज्वल भविष्य में विश्वास बढ़ रहा है। ये सब शुभ लक्षण हैं। शक्तिशाली और संपन्न भारत के लिए अनेकानेक लोग प्रयासरत हैं। यह सब हर्ष का विषय है। अस्तु !

टेक्सास की हिंदी पाठशाला

-अभिनव शुक्ल की रिपोर्ट

सैन एंटोनियो- टेक्सास की 'हिंदी पाठशाला' का प्रारम्भ 2015 में 'ओम एजुकेशन सोसाइटी' के अन्तर्गत हुआ| हिंदी पाठशाला एक गैर लाभकारी स्वैच्छिक संगठन है| 40 छात्रों से शुरू हुई इस संस्था में वर्तमान में सैकड़ों छात्र शिक्षा ले रहे हैं| यह पाठशाला हिंदी में व्याकरण, रचना और बातचीत सीखने से लेकर संस्कृति के विभिन्न आयामों से जुड़ी कक्षाएँ भी संचालित करती है| एक गुणात्मक परीक्षा पूरी कर, इस पाठशाला में पढ़ने वाले मिडिल और हाई स्कूल के छात्र "हिंदी लैंग्वेज प्रोफिशिएंसी सर्टिफिकेट" प्राप्त कर सकते हैं| छात्रों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित करने और उन्हें भारत की सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहने में मदद करने के लिए अनेक स्वयंसेवी शिक्षक अपना नियमित समय पाठशाला को प्रदान करते हैं|

भारतीय स्वतंत्रता के पचहत्तरवें वर्ष का उत्सव मानते हुए संसार भर में होने वाला "आज़ादी का अमृत महोत्सव" भी इस वार्षिकोत्सव के संग संस्था में मनाया गया| कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ह्यूस्टन से पधारे काउंसल जनरल श्री असीम महाजन थे| श्री महाजन ने भाषा के महत्त्व पर सारगर्भित वक्तव्य दिया| हिंदी पाठशाला के संस्थापक श्री त्रिनाभ शुक्ल ने सभी छात्रों, अभिभावकों और पाठशाला की टीम को धन्यवाद ज्ञापित किया और यह भी बतलाया कि पचहत्तरवें भारतीय स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में पाठशाला की कक्षाओं के नाम स्वतंत्रता सेनानियों पर रखे गए हैं| चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, दुर्गा भाभी, रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला नाम की कक्षाएँ छात्रों को अपनी भाषा के साथ- साथ ऐतिहासिक संघर्षों और नायकों से भी परिचित कराती हैं| ■

वंजारी समूह, न्यूजर्सी

-अभिनव शुक्ला की रिपोर्ट

प्लेनफील्ड, न्यू जर्सी. नगर की लोकप्रिय नाट्य-संस्था वंजारी समूह के "एन्कोर थिएटर फेस्टिवल" में हिंदी के दो नाटकों का मंचन हुआ| नादिरा बब्बर का नाटक "पेन किलर" और पंकज सोनी का नाटक "ज़हर" दोनों की दर्शकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की| सभी कलाकारों ने पात्रानुकूल अभिनय किया, निर्देशन अच्छा रहा तथा इन नाटकों को देख कर कोई ये नहीं कह सकता था कि इसके सभी कलाकार मात्र शौकिया तौर पर अभिनय कर रहे थे। कार्यक्रम की संयोजिका डॉली भाटिया वंजारी ने बताया कि यह संस्था नियमित रूप से नाट्य उत्सवों का आयोजन करती है| इन आयोजनों में वे एक नाट्य लेखन प्रतियोगिता भी रखते हैं तथा प्रतियोगिता के विजेताओं के नाटकों का मंचन भी होता है| नाटकों का मंचन हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा में भी होता है|

वंजारी की प्रमुख गतिविधियों में लोक नृत्य भी शामिल हैं| संस्था बच्चों को इस क्षेत्र में उनके कलात्मक कौशल का प्रदर्शन करने में मदद करती है। धर्म और संस्कृति के माध्यम से जुड़ाव और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना भी संस्था के उद्देश्यों में से एक है| भारतीय-अमेरिकी युवाओं और परिवारों को सांस्कृतिक/सामुदायिक गतिविधियों में स्वेच्छा से शामिल करने के क्षेत्र में संस्था प्रयासरत है| ■

काजल कुमार

पिछले कई सालों से कार्टून बना रहे हैं। 'लोटपोट' हिन्दी बाल साप्ताहिक के लिए ढाई दशक तक 'चिंप्पू' और 'मिन्नी' फ़ीचर भी बनाये...एक लघुकथा संग्रह 'एक था भौंदू व अन्य लघुकथाएं' प्रकाशित।

ईमेल - kajalkumar@comic.com

चित्र और चित्रकार

चित्रकार : अशोक भौमिक

द बर्ड सेलर-2, 30x30 इंच

एक्रिलिक, पेन और स्याही से कैनवस पर क्रॉस हेचिंग

वर्ष : 2020